

81	क्षये क्षिया ।	80
82	स्फुरणं स्फुरणे ॥	80
83	ज्यानिर्जोर्णा-	80
84	वय वरो वृतौ ॥ १५२३ ॥	80
85	समुच्चयः समाहारो	80
86	ऽपहारापचयौ समौ ।	80
87	प्रत्याहार उपादानं	80
88	बुद्धिशक्तिस्तु निष्क्रमः ॥ १५२४ ॥	80
89	इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्यो धातुषु लक्षणम् ।	80
90	अथाव्ययानि वक्ष्यन्ते	80
91	स्वः स्वर्गे	80
92	भू रसातले ॥ १५२५ ॥	80
93	भुवो विहायसा व्योम्नि	80
94	द्यावाभूम्योस्तु रोदसी	80
95	उपरिष्ठाडुपर्यूर्ध्वं	80
96	स्यादधस्तादधो ऽप्यवाक् ॥ १५२६ ॥	80
97	वर्जने तत्तरेणर्ते हिरण्मना पृथग्विना ।	80

81. Vernichtung (2 W.). — 82. Zittern (2 W.). — 83. Entkräftung, Altersschwäche (2 W.). — 84. Ein Gnadengeschenk, das man sich auswählt (2 W.). — 85. Anhäufung (2 W.). — 86. Verlust (2 W.). — 87. Ablenken der Sinne (2 W.). — 88. Geistesvermögen. — 89. Die übrigen Wörter, die eine Thätigkeit ausdrücken, definire man selbst; die Merkmale sind in den Wurzeln enthalten. — 90. Nun werden die Indeclinabilia aufgeführt werden. — 91. Himmel. — 92. Pâtâla. — 93. Luft, Himmel (2 W.). — 94. Himmel und Erde. — 95. Oben (2 W.). — 96. Unten (2 W.). — 97. Ohne (6 W.).